भजन

कव्वाली
नूरे नूरानी सूरत उसपे है ये अदा, शामिल हुई मेहरों ने तो कर दी है ये कजा
बरनन करुं मैं कैसे छवि युगल पिया, बरसती मेहरों से लिया मानों एक कतरा
स्थाई :–
नैना खोल खिलवत में, निसबत जगा लो,अपने राज श्यामा की छवि तो निहारो
ऐसे हैं पिया मेरे, ऐसी है श्यामा, युगल पिया शोभा को, दिल में बसा लो
1 युगल सरूप की शोभा का है दधि सागर, इसमें है नूर नीर और खीर भी शामिल
नीर मिला खीर में ऐसी हुई हलचल, नूर खिंचता आया नीर खीर ले दधि सागर
सिनगार सजे सब ,माहें दधि सागर

1. रुह आशिक चरण की आशिक की रुह चरण ये,है ऐसा ये नाता खबर न किसी पे
सराबे सुराही पीये हक की वाहेदत, प्यारे चरण ये है वाहेदत की निसबत
सलूकी तो देखो पिया चरणों की सब, है नाजुक नरम कोमल अंगुलियों की छब
चरण तली उज्जवल लांक गहरी है लालक,सलूकी तले ऊपर करूँ कैसे बरनन
ली चरणों के ऊपर निगाहें इस्क की, पहनी इज़ार पिया केसरिया रंग की
चुन्नटों में झांझरी कड़ला कांबी घूंघरी, चलें जब पिया धुन ये दिल को है खिंचती
सफेद जामे पर सोहे नीलो पीलो पटुका, बाजू बंध के फुमन में दिल रुह का अटका
कंठ पर फबे है पांच हार वो नूरी, पिछोरी है कंधों पे रंग आसमानी
कलाई में पोहोंची दुगदुगी को निहारो, उंगली में अंगुठियो की शोभा निहारो।
शोभा निहारो, अपने राज श्यामा की.....

2) मुख गौर उज्जवल लिए गहरी लालक, जैसी अमरद सूरत वैसे वस्तर भूखन
मस्तक तिलक रंग झलके है कंचन, करकरी किनार लाल बिंदी है अन्दर
सलूकी तो देखो पिया मस्तक बनी जो, तिलक की है शोभा नासिका तक बनी जो
भौंहों में पिया की भरी है चंचलता, नैनो के ऊपर है सोहे शरारत
पिया नैना ये तेरे मुतलक मार डारें, लाल लाल डोरों में रुह को फसा लें
इस्के समन्दर में रुहों को डुबा ले,नैनों से नैन मिलते लगते हैं प्यारे
पिया जुल्फों की तो अपनी अदा है,घुंघराली जुल्फो में इत्रे हिना है
जुल्फे पिया की, कंधों पे उतरती, ये जुल्फे छटकने से रुहें गिर गिर पड़ती
हैं पाग सोहे सिर पे, पेचों में पेच बन के, सारंगी सी बनाए
पाग बीच दुगदुगी कलंगी सोहाए, कानों’ में है कुंडल बीच मोती निहारो
युगल पिया शोभा को दिल में बसा लो नैना खोल खिलवत में.....

भजन

3) अधुर लाल मेरे मासूक के मदभरे, अति मीठे रसीले प्याले इश्क भरे
नासिका बेसर जो है लाली लिए, होंठों की शोभा ना जाए कही ये

श्री श्यामा जी भी दीवानी पिया की, शोभा निहारे दिलबर दिलकशी से
चरण श्यामा जी सदा दिल में ही रखना,है अंग रूहें उनकी सदा याद रखना
है चरणों में अनवट बिछुआ विसेखे, घूंघरी झांझर कांबी कड़ला वो देखे
नीली लाही चरणिया साड़ी सेन्दुरिया, कंचुकी श्याम रंग की पहनी मेरी श्यामा

करघनी जो कमर में पिया लागे प्यारी, गले सात हारों की शोभा निराली
है हाथों पंचागला दस अंगुठियाँ भी प्यारी,पोंहोंची नवघरी नवचूड़ कंकनी प्यारी
बाजूबंध, बाजू में फुमन है प्यारे, कई रंगों की तरंगें करती इशारे
करती इशारे,अपने राज श्यामा की......

4) अति सुन्दर है गौर लाल उज्जवल मेरी श्यामा जी का मुख मण्डल
कानों में पहनी पानड़ी पानड़ी सोहे, नाक बेसुर की शोभा भी मोहे
नथनी की चेन कानो तक पहुँची, गालों पे बार - बार, है लगती
नैना मयखाने इश्के जाम भरे, इश्के प्यास रुह की यहीं है बुझे
बिंदी पे बेंदा राखड़ी माणिक,स्वर्ण पट्टी में मोतियों की सरे
चांदे पे पल्लू है ठहरा ऐसे, जैसे इतरा रहा हो यूं खुद पे
आधे घूंघट माशूक, की शोभा ,छवि निरखे रूहें ये निसबत से
ऐसी शोभा को देख कर रुहे,न संभल पाती मदहोश रहें
कंठ से कंठ लगे श्यामा जी के, प्यार ही प्यार सब, देवें लेवें
सुराही नैनो से रूहें पीती -इस्के आनंद पाके वो जीती